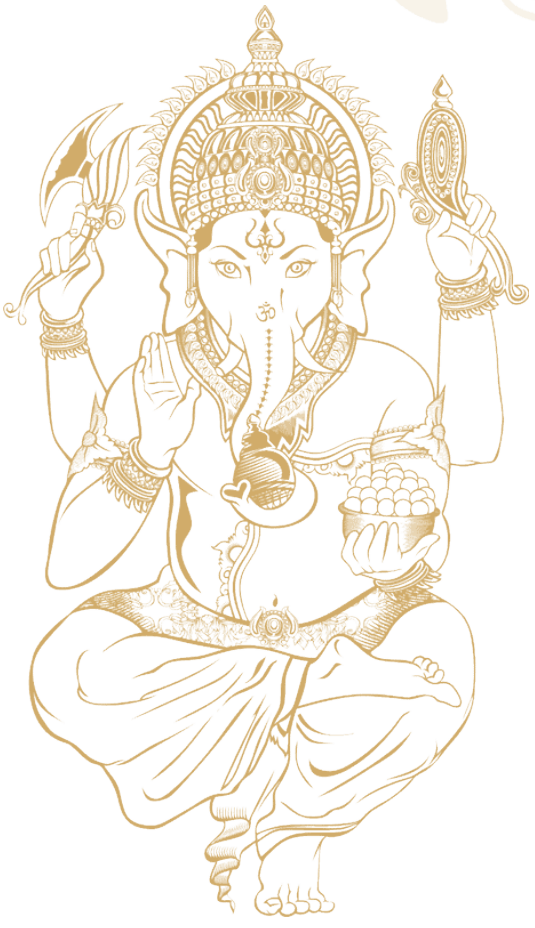

Mr. Utkarsh vaishnav

Ms. Sheetal bairagi

Model: Web-FreeMatching

Order No: 120856809

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
19/06/2001	जन्म तिथि	07/03/2004
मंगलवार	दिन	रविवार
घंटे 08:05:00	जन्म समय	09:30:00 घंटे
घटी 05:57:16	जन्म समय(घटी)	06:58:09 घटी
India	देश	India
Indore	स्थान	Dewas
22:42:00 उत्तर	अक्षांश	22:59:00 उत्तर
75:54:00 पूर्व	रेखांश	76:03:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:26:24	स्थानिक संस्कार	-00:25:48 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:42:05	सूर्योदय	06:42:15
19:13:20	सूर्यास्त	18:31:38
23:52:22	चित्रपक्षीय अयनांश	23:54:45

विंशोत्तरी
सूर्य 3वर्ष 3मा 23दि

राहु	
12/10/2021	
13/10/2039	
राहु	24/06/2024
गुरु	18/11/2026
शनि	24/09/2029
बुध	12/04/2032
केतु	01/05/2033
शुक्र	30/04/2036
सूर्य	25/03/2037
चन्द्र	24/09/2038
मंगल	13/10/2039

ग्रह	राशि	अंश
लग्न	मेष	16:13:21
सूर्य	कुंभ	23:00:31
चंद्र	सिंह	25:30:32
मंगल	मेष	27:01:05
बुध	कुंभ	25:50:35
गुरु व	सिंह	19:39:54
शुक्र	मेष	07:38:52
शनि व	मिथु	12:22:26
राहु व	मेष	18:43:18
केतु व	तुला	18:43:18
हर्ष	कुंभ	09:40:42
नेप	मक	20:11:01
प्लूटो	वृश्चि	28:14:57

ग्रह	राशि	अंश
लग्न	मेष	16:13:21
सूर्य	कुंभ	23:00:31
चंद्र	सिंह	25:30:32
मंगल	मेष	27:01:05
बुध	कुंभ	25:50:35
गुरु व	सिंह	19:39:54
शुक्र	मेष	07:38:52
शनि व	मिथु	12:22:26
राहु व	मेष	18:43:18
केतु व	तुला	18:43:18
हर्ष	कुंभ	09:40:42
नेप	मक	20:11:01
प्लूटो	वृश्चि	28:14:57

विंशोत्तरी
शुक्र 1वर्ष 8मा 25दि

मंगल	
01/12/2021	
01/12/2028	
मंगल	29/04/2022
राहु	18/05/2023
गुरु	23/04/2024
शनि	02/06/2025
बुध	30/05/2026
केतु	26/10/2026
शुक्र	26/12/2027
सूर्य	02/05/2028
चन्द्र	01/12/2028

लग्न-चलित

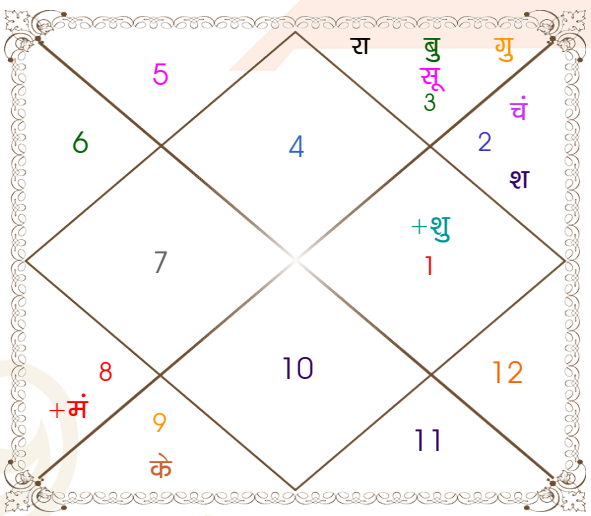

लग्न-चलित

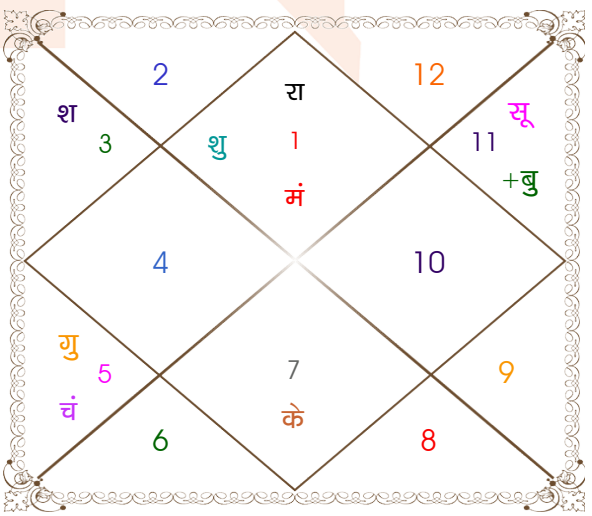

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	वैश्य	क्षत्रिय	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	वनचर	2	0.00	--	स्वभाव
तारा	सम्पत	अतिमित्र	3	3.00	--	भाग्य
योनि	मेष	मूषक	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	शुक्र	सूर्य	5	0.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	मनुष्य	6	0.00	हाँ	सामाजिकता
भकूट	वृष	सिंह	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	20.00		

गणदोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों मे मित्रता नहीं है।

डतण् न्जांतेी अंपेीदंअ का वर्ग गरूड़ है तथा डेण्ौममजंस इंपतंहप का वर्ग श्वान है। इन दोनों वर्गो में परस्पर मित्रता है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार डतण् न्जांतेी अंपेीदंअ और डेण्ौममजंस इंपतंहप का मिलान औसत है।

मंगलीक दोष मिलान

डतण् न्जांतेी अंपेीदंअ मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में पंचम् भाव में स्थित है।

डेण्ौममजंस इंपतंहप मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके स्थिते।
वृषे जाये घटे रन्ध्रे भौम दोषो न विद्यते।।

अर्थात् मेष राशि लग्न में, द्वादश में धनुराशि, चतुर्थ में वृश्चिक राशि, सप्तम में वृष राशि तथा अष्टम में कुम्भ राशि में मंगल स्थित हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल डेण्ौममजंस इंपतंहप कि कुण्डली में प्रथम भाव में मेष राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा।।

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल डेण्ौममजंस इंपतंहप कि कुण्डली में स्वराशि में है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं राहु डेण्ौममजंस इंपतंहप कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि डतण् न्जांतेी अंपेीदंअ कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

डतण् न्जांतेी अंपेीदंअ तथा डेण्ौममजंस इंपतंहप में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।